IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामायण महाकाव्य में प्रधान–रस के रूप में निरूपित 'करुण–रस' का विवेचन

(चन्द्र किशोर) असि0 प्रोफेसर संस्कृत – विभाग, ब्रह्मावर्त पी0जी0 कालेज, मन्धना, कानपुर नगर, उ0प्र0।

सारांश

संस्कृत–जगत् में वाल्मीकि रामायण आदि काव्य और महर्षि वाल्मीकि आदि कवि के रूप में विख्यात हैं। आदि काव्य रामायण की रचना 'शोक' स्थायी भाव मूलक–'करुण–रस' जन्य है। क्रूरव्याध के वाण से विद्ध काम मोहित क्रौंच को तड़पते हुए देख महर्षि का 'शोक' श्लोक रूप में फूट पड़ा था– मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।

यत् क्रौंचमिथनु ादेकमवधीः काममोहितम्।। [1]

महर्षि वाल्मीकि ने भी स्वीकार किया है कि उस श्लोक का कारण उनका वह 'शोक' ही है और कुछ नहीं–

शोकार्त्तस्य प्रवृत्तो में श्लोको भवतु नान्यथा। [2]

प्रस्तावना

काव्य का परमार्थतः प्रयोजन रसास्वादमूलक आनन्दातिशय माना गया है। वाल्मीकि ने भी करुण–रस रूपी आनन्द से प्रेरित होकर ग्रन्थ की रचना की है। यद्यपि की आलोचकों ने भी इस ग्रन्थ–रत्न में करुण–रस के प्राध्यान्य को स्वीकार किया है। लेकिन रस–तत्त्व के सन्दर्भ में वाल्मीकि रामायण में वीरादि रसों के साथ प्रधानतः करुण–रस ही आदि से लेकर अन्त तक सर्वत्र विध्यान है। आचार्य आनन्दवर्धन ने भी रामायण महाकाव्य में करुण–रस की प्रधानता को स्वीकार किया है। उनके अनुसार–रामायण में –'शोकः श्लोकत्त्वमागतः, कहने वाले आदि कवि वाल्मीकि ने स्वयं ही करुण–रस का अङ्गीत्त्व या प्रधान्य स्वीकार किया है और सीता के अत्यन्त वियोग पर्यन्त ही काव्य की रचना करके उसका निर्वाह भी किया है– रामायणे हि करुणो रसः स्वयमदिकविमाना सूत्रितः शोकः श्लोकत्त्वमागतः इत्येववादिना। निर्व्यूढश्च स एव सीतात्यन्तवियोगपर्यन्तमेवस्वप्रबनधमुपरचयता। [3] साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने भी रामायण में 'करुण–रस' को 'प्रधान–रस' के रूप में माना है। उनका कहना है कि 'करुण–रस' को दुःखमय मानेंगे तो 'करुण–रस' प्रधान रामायण आदि प्रबन्ध भी दुःख के हेतु होगें–

तथा रामायणादीनां भविता दुःखहेतुता। [4]

मुख्यशब्द

शोकःश्लोकत्त्वमागतः, रसास्वादमूलक, आनन्दातिशय, प्रतिष्ठा, शोकार्त्तस्य, वियोगपर्यन्तम्, काममोहितम।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रधान–रस के रूप में निरूपित 'करुण–रस का परीक्षण।

रामायण कथा भारतीय जनमानस में इतनी फूली–फली है, कि इससे अलग भारतीय अस्तित्त्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती–

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।। [5]

वाल्मीकि–रामायण में यद्यपि कि महर्षि वाल्मीकि ने रसों की संख्या पर कोई ध्यान नहीं दिया है, क्योंकि रामायण की कथा लिखना ही उनका प्रमुख उद्देश्य था, फिर भी रामायण में काव्य के सभी रसों का प्रयोग मिलता है, जिनको आधार बनाकर परवर्ती काव्याचार्यों ने रसों की संख्या को निर्धारित करने का प्रयास किया है। वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में नवों–रसों का उल्लेख मिलता है–

पाठ्येगेये च मधुरं प्रमाणैस्त्रि भिरन्वितम्। जातिभिः सप्तभिर्बद्धम्, तन्त्रीलयसमन्वितम्।। रसैः
श्रृङ्गारकरुणहास्यरौद्र भयानकैः । वारादिभिश्च संयुक्तं काव्यमेतदगायताम्।। [6]

किन्तु इन सभी रसों मे करुण–रस का प्रयोग प्रधान रूप से हुआ है और उसे काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिस्थापित किया गया है। वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में ऋषि विश्वामित्र द्वारा अपने यज्ञ की रक्षा के निमित्त श्रीराम और लक्ष्मण की मांग करने की घटना में 'करुण–रस' प्रयुक्त हुआ है। श्रीराम की मांग सुनने पर राजा दशरथ की दयनीय अवस्था हो जाती है–

स तन्निशम्य राजेन्द्रो विश्वामित्रवच शुभम्। शोकेन महताविशिष्टश्चचाल च मुमोह च ।। [7]

राजा दशरथ को पुत्र–वियोग की आशङ्का से महान दुःख हुआ। इस दुःख से पीड़ित हो वह सहसा काँप उठे और बेहोस हो गये। यहाँ महर्षि वाल्मीकि ने राजा दशरथ की पुत्र–वियोग से उत्पन्न आशङ्का से उत्पन्न दुःख को चित्राङ्कित किया है।

आदि कवि वाल्मीकि 'शोक' को अभिव्यक्ति देने में मर्मस्पर्शी प्रसङ्ग प्रस्तुत करते हैं। कैकेयी द्वारा श्रीराम को चौदहवर्ष का वनवास सुनकर राजा दशरथ का हृदय 'शोक' से संतृप्त हो जाता है और वे दुःख से वशीभूत होकर विलाप करने लगते हैं– इति दुःखाभिसंतप्तं विलपन्तमचेतनम। धूर्णमानं महाराजं शोकेन समभिप्लुतम्।। [8]

श्रीराम जी के वन–प्रस्थान करते समय सारा नगर अत्यन्त पीड़ित हो गया। उस समय न केवल राज–परिवार अपितु समस्त अयोध्या नगरी शोकाग्नि में जल रही थी। भ्राता लक्ष्मण को चोंट खाये सर्प के समान तड़पता देखकर राम के चित्त में उदिप्त 'शोक' के रूप में जो अभिव्यक्ति हुई है, वे शब्द भारतीय जन–मानस की अमर–निधि बन गये हैं– देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः। तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः।। [9]

रामायण के अनेक स्थलों पर 'करुण–रस' की अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं। रावण द्वारा अपहरण के समय सीता असहाय होकर सहायतार्थ 'करुण–क्रन्दन' करती है। ऐसे ही अनेक शोकमय विलाप रामायण में अनेकशः उपस्थित होते हैं। सीता अपहरण के पश्चात् सीता को न देखकर श्रीराम 'शोकाचित' होकर विलाप करते हैं– आदित्य भो लोकृताकृतज्ञ, लोकस्य सत्यानृतकर्मसाक्षिन्। मम प्रिया सा क्व गता हता वा, शंसस्व मे शोकहतस्य सर्वम्।। [10]

इसी प्रकार बाली बधोपरान्त उसकी पत्नी तारा का 'करुण–विलाप' में 'करुण–रस' की धारा प्रवाहित हुई है–

निरानन्दा निराशाहं निमग्ना शोकसागरे।
त्वयि पंचत्त्वमापन्ने महायूथ पयूथपे।। [11]

सुन्दरकाण्ड में श्रीराम की याद में शोक–संतप्त सीता विलाप करती हुई कहती है कि–

किं वा मभ्यगुणाः केचित् किं वा भाग्य क्षयो हि मे।
या हि सीता वारार्हेण हीना रामेण भामिनी।। [12]

युद्धकाण्ड में इन्द्रजीत की मृत्यु का समाचार सुनकर रावण 'शोक–ग्रस्त' हो कहता है–

मम नाम त्वया वीर गतस्य यमसादनम्।
प्रेतकार्याणि कार्याणि विपरीते हि वर्तसे।। [13]

उत्तरकाण्ड में लक्ष्मण द्वारा सीता को वन में छोड़ते समय अपने निवार्स न की वात सुनकर सीता के नेत्रों से आँसुओं की अविरल धारा प्रवाहित होने लगती है–

ममाभिकेयं तनुर्नूनं सृष्टा दुःखाय लक्ष्मण।
धात्रा यस्यास्तथा मेऽद्य दुःखमूर्तिःप्रदश्यते।। [14]

आदि कवि वाल्मीकि ने अपनी काव्यकृति में 'करुण–रस' के साथ–साथ अन्य–रसों, जिनमें श्रृङ्गार , हास्य, वीर, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शान्त आदि रसों का यथोचित प्रयोग किया है। वाल्मीकि रामायण मे वीरता के चारों प्रकार– दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर सभी के प्रमाण मिलते है। भारत वर्ष क` एक सच्चे क्षत्रिय के उज्ज्वलतम उदाहरण हमें श्रीराम में पूर्णरूप से मिलते हैं, जिनकी यह दृढ़भावना है कि क्षत्रियों का धनुष–धारण करने का मुख्य उद्देश्य है कि जब किसी पीड़ित या असहाय व्यक्ति का आर्तनाद सनु ाई पड़े, तो उसकी रक्षा करें– किं तु वक्ष्यम्यंहदेवि त्वयैवोक्तमिदं वचः।

क्षत्रियैर्धर्यते चापो नार्तशब्दो भवेदिति।। [15]

वाल्मीकि रामायण में श्रृङ्गार–रस के दोना` भेदों– संयोग तथा वियोग का समावेश अनेक स्थलों पर हुआ है। राम और सीता के अनुराग के प्रथम दर्शन उनके विवाह के बाद अयोध्या निवास के समय मिलता है। यहाँ श्रङृ ्गार–रस के जिस अलौकिक और सात्त्विक रूप की अनुभूति होती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। राम और सीता विषयक रति उस समय अत्यधिक मार्मिक रूप में परिस्फुटित हुई है, जब राम और सीता 'अशोक–वाटिका' गमनार्थ उद्यत होते हैं– रामस्त ु सीतया सार्धं विजहार बहूनतृ ून। मनस्वी तद्गतस्तस्या नित्यं छदिसमर्पितः।। [16]

वाल्मीकि रामायण में हास्य–रस के प्रायः सभी भेदों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। आदिकवि द्वारा रामायण में हास्य–रस के कुछ ऐसे स्थल भी प्राप्त होते हैं, जहाँ किसी मूर्खतापूर्ण कार्यों के माध्यम से हास्य–रस की अभिव्यंजना होती है। अयोध्या काण्ड में कैकेयी–मन्थरा संवाद में कैकेयी, मन्थरा की कुरूपता का सौन्दर्य–रूप में वर्णन करती है, तो हास्य–रस की स्थिति उत्पन्न हो जाती है– विमलेन्दुसमं वक्त्रमहो राजसि मन्थरे, जघनं तव निर्मष्ट ं रशनादामभूषितम्। जङ्घे भृशमुमन्यस्ते पादौ च व्यायताम्बुभौ, तवमायताभ्यां सक्थिभ्यां मन्थरे क्षौमवासिनी।। अग्रतो मम गच्छन्ती राजसेऽतीव शोभने।। [17]

जब सीता अन्वेषण में राम, सुग्रीव की उपेक्षा के कारण उससे क्रुद्ध होते हैं और अपना क्रोधपूर्ण सन्देश देकर लक्ष्मण को उसक `पास भेजते है। लक्ष्मण द्वारा सुग्रीव के प्रति कथन है– 'न त्वां रामो विजानीते सर्प मण्डुकरा विषम्।' वाल्मीकि रामायण में भयानक–रस की अत्यन्त सुन्दर पराकाष्ठा की अुनभूति होती हैं। सहृदय–जन के चित्त में संकोच उत्पन्न करके आस्वादन में उत्कर्षत्त्व प्रदान करने में भयानक रस का भी अपना विशिष्ट स्थान है। युद्धकाण्ड में जब कुम्भकरण रणभूमि में युद्ध के लिए उपस्थित होता है, तो उसकी शारीरिक बनावट और भयंकर आकृति को देखकर वानर भयभीत होकर भागने लगते हैं– ननाद च महानादं समुद्रमग्निनादयन्। विजयन्निव निर्धातान् विधियन्निव पवर्त ान्।। तमवध्यं मधवतां यमेन वरूणेन वा। प्रेक्ष्य भीमक्षमायान्तं वानरा विप्रदुदुवः।। [18]

वाल्मीकि रामायण में 'जुगुप्सा' नामक स्थायीभाव की परिपक्व अवस्था को 'वीभत्स–रस' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। युद्धकाण्ड में कुम्भकरण के खाने–पीने को देख कर लोग घृणा से मुंह फेर लेते हैं– आदद बुभुक्षितो मांसं शोणितं तृषिताऽपिबत्। मोदः कुम्भाश्च मद्यांश्च पपौ शक्ररिपुस्तदा।। [19]

वाल्मीकि रामायण में अनेक स्थलों पर अद्भुत घटनाओं की अभिव्यक्ति द्वारा सहृदय–जन अत्यधिक आनन्दित होता है। अरण्यकाण्ड में स्वर्णमृग का दृश्य भी अद्भुत–रस का उदाहरण है– न बने नन्दनोद्देशे न चैत्ररथ संश्रये। कुतः पृथिव्यां सौमित्रे सोऽस्य कश्चित् समो मृगः।। पश्यास्य जृम्भमाणस्य दीप्तामग्नि शिखोपमाम्। जिह्वां मुखाग्निः सरन्तीं मेधादिवशतह्रदाम्।। [20]

वाल्मीकि रामायण में यद्यपि की शान्त–रस का वर्णन अत्यल्प मात्रा में हुआ है, फिर भी विविध स्थानों में सहृदय के लिए आनन्द का कारण बना हुआ है। यहाँ प्रकृति विषयक शान्त–रस और विरक्ति विषयक शान्त–रस नामक दोनों सत्ताओं का वर्णन प्राप्त होता है। वाल्मीकि रामायण में वात्सल्यभाव के विविध उदाहरणों में वात्सल्य–रस की अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं। रघुवंशम् महाकाव्य में कहा गया है कि वाल्मीकि रामायण में पितृवत्सल्य राम के प्रति दशरथ का स्नेह वात्सल्य–रस की अनुभूति करवाता है–

तिण्ठेल्लोको बिना सूर्यं सस्यं वा सलिलं बिना। न तु रामं बिना देहे तिष्ठेत्तु मम जीवितम्।। [21]

यद्यपि कि आदि कवि वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य में श्रृङ्गार, हास्य, वीर, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शान्त और शान्त इन समस्त रसों का प्रयोग समुचित रूप में किया है, किन्तु सम्पूर्ण रामायण महाकाव्य में हृदयस्थ के रूप मे ं करुण–रस का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। अतएव निष्कर्षतः कह सकते हैं, कि रामायण महाकाव्य का प्रधान–रस 'करुण–रस' ही है।

सन्दर्भ–सूची

1. वाल्मीकि रामायण – 1/2/15
2. वही, 1/2/18
3. आनन्दवर्धन (1998)। ध्वन्यालोक। सिद्धान्त शिरोमणि, विश्वेश्वर (ध्वन्यालोक हिन्दी व्याख्या), वाराणसी, भारत, ज्ञानमण्डल लिमिटेड–4/5
4. विश्वनाथ (2016)। साहित्य दर्पण। शर्मा, शेषराज 'रेग्मी' (साहित्य दर्पणः 'चन्द्रकला' संस्कृत–हिन्दी व्याख्योपेतम्)। वाराणसी, भारत, चौखम्भा, कृष्णदास अकादमी–3/5
5. वाल्मीकि रामायण–2/36/7
6. सहाय, राजवंश 'हीरा' (सं0 2024)। भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिध सिद्धान्त। वाराणसी, भारत, चौखम्भा संस्कृत सिरीज आफिस–पृ–197
7. वाल्मीकि रामायण – 1/19/20–21
8. वही, 2/12/37
9. वही, 6/101/15
10. वही, 3/63/16
11. वही, 4/20/9
12. वही, 5/26/42
13. वही, 6/92/14
14. वही, 7/48/3
15. वही, 3/9/3
16. वही, 1/76/14
17. वही, 2/9/43–45
18. वही, 6/66/2–3
19. वही, 6/60/63
20. वही, 3/43/26–28
21. कालिदास (वि0सं0 2076)। रघुवंशम्। गिरि, कपिलदेव (सम्पादक),वाराणसी, भारत, चौखम्भा संस्कृत भवन–3/25